दैनिक भास्कर
रविवार, 20 दिसंबर 2020 नोएडा

मेरी दुनिया है मां तेरे आंचल में

गीतांजलि सक्सेना

जिंदगी/वात्सल्य

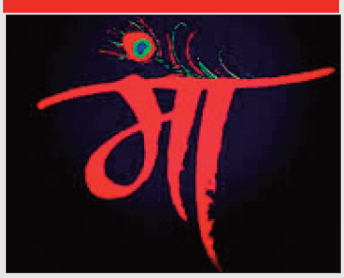

मां का वात्सल्य, सौम्यता और दया के लिए, धरती पर हम लोगों के जीवन में उनका विशेष स्थान है। हमारी संस्कृति में मां को अच्छे संस्कारदाता के रूप में सराहा जाता है। हमारे शास्त्रों में भी माता के अनेक रूपों का वर्णन किया गया है।

आदिकाल से ही पृथ्वी को मातृभूमि की संज्ञा दी गई है... भारतीय अनुभूति में पृथ्वी आदरणीय बताई गई है, इसीलिए पृथ्वी को माता कहा गया है। महाभारत के यक्ष प्रश्नों में इस अनुभूति का बोध होता है। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि आकाश से भी ऊंचा क्या है और पृथ्वी से बड़ा कौन है? उसका उत्तर सिर्फ एक माता व पिता।

पृथ्वी देवी है, और अपनी सर्वोच्च शक्ति के माध्यम से हमारी रक्षा सदियों से करती आ रही है। कथा पुराणों में जिक्र है। सत्ययुग के दौरान असुर हिरण्याक्ष ने जब इंद्र का राज्य छीन कर और तीनों लोक को प्रताड़ित किया, तब भगवान विष्णु ने वराह अवतार लेकर उसका वध किया था।

पृथ्वी पर जीवन में होने वाली हर समस्याओं का सामना करने के लिए धैर्य, शक्ति और क्षमता का वर्णन हमारे शास्त्रों में ऋषियों और देवताओं ने भी किया है। त्रेता युग में माता सीता ने अवतार लिया और भगवान राम की संगिनी बनी, सेवा की और लव कुश की मां बनी। उन्होंने द्वापर में माता सत्यभामा का अवतार भी लिया और भगवान कृष्ण को उचित तरीके से सेवा की शिक्षा दी। भगवान कृष्ण की जननी मां देवकी और उनकी पालनहारी यशोदा मां के रूप में पूजा अर्चना करने का भी महत्व है। इस कलियुग में, उन्होंने अदिति अवतार लिया और भगवान विष्णु की सेवा की और उनमें विलीन हो गई।

मां का वात्सल्य, सौम्यता और दया के लिए, धरती पर हम लोगों के जीवन में उनका विशेष स्थान है। हमारी संस्कृति में मां को अच्छे संस्कारदाता के रूप में सराहा जाता है। हमारे शास्त्रों में भी माता के अनेक रूपों का वर्णन किया गया है। उन्हें मां दुर्गा देवी, सरस्वती व लक्ष्मी के अवतार के रूपों में भी पूजा जाता है। माना जाता है कि उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा और विश्वास रखने से ही आपकी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। इन सबकी उपस्थिति के बिना कोई भी हवन और यज्ञों की आहूति संपूर्ण नहीं होती है। भगवान का ही दूसरा रूप है माँ। एक आसान सा शब्द हो सकता है। लेकिन इस शब्द की गहराई को समझना बड़ा ही मुश्किल है। माँ नाम के इस छोटेसे शब्द की विशालता को आकलन करना असंभव है। इस संसार में इसका स्थान सबसे बड़ा माना जाता है। माँ शब्द में ही पूरा संसार समाया है। माँ न होती, तो सृष्टि का सृजन न होता, और जीवन न होता और न ही आज हम होते। ईश्वर का मनुष्य कल्याण के लिए भेजा मां का ही एक अंश है। तो कोई इन्हें खुद भगवान ही समझता है। हमारी पहचान मां से है, हमारे अस्तित्व की जान उन्हीं से और जिन्दगी बरकरार है, तो उन्हीं से।

इसीलिए भारतीय संस्कृति में पृथ्वी को देवी माता रूप में धरती माँ माना जाता है। संसार की रचयिता का उल्लेख हमारे प्राचीन शास्त्रों में भी उल्लेख है कि जब-जब कोई विपदा या संकट आया है, या आता है ... एक सशक्त शक्ति के रूप में मां हर प्राणी की रक्षा करती है। धरती माँ एक दो की ही नहीं, लाखों, करोड़ों और अरबों की जननी के रूप में हमारा पालन पोषण करती है। अपने आँचल की छांव में सभी को समाये हुए है। उसकी छत्र छाया में ही हम सभी हर सुख और समृद्धि के रास्ते खोजते हैं। वह भी हर किसी को बिना भेदभाव के सब को समान अधिकार देते हुए उसे पूर्ण स्वतंत्रता देती है। तभी तो उसे माँ की उपाधि प्राप्त है। यूँ ही नहीं सौगंध खाते हैं मातृभूमि की, हम सब और, देश प्रमुख भी।

किंतु यहाँ हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उस मां के प्रति हमारी भी कुछ जिम्मेदारियां हैं, जिन्हें हम पीछे छोड़ते हुए भूलते जा रहे हैं। धरती माँ की कीमत समझने का वक्त है। हमने क्रूर बनकर, विकास के नाम पर जिस कदर औद्योगीकरण और शहरीकरण बढ़ाया है, उसके परिणाम बेहद दुखदायी हैं। बिना सोचे समझे हम पृथ्वी पर बोझ डालने का काम कर रहें हैं। यही तो कारण है, आज पर्यावरण संरक्षण हेतु किए गये प्रयासों में सफलता नहीं प्राप्त हो रही है। जिसके दूरगामी परिणाम अत्यंत हानिकारक हैं।

इतिहास गवाह है, जब हमने धरती मां को बांटने की कोशिश की, उसकी तस्वीर कभी भी रोचक नहीं रही। बस इंसानी रिश्तों के बीच सीमा रेखांकित हो जाती है। उनमें दूरियों का फासला इस कदर बढ़ जाता है कि एक दूसरे को एक ही जन्मभूमि में नागरिक मानना अस्वीकार होने लगता है।

सच तो यह भी है कि माँ सिर्फ हमको जन्म देने से ही नहीं होती। उसका सम्बन्ध हमारी आत्मा और रिश्तों की उन गहराइयों से भी जुड़ा होता है। बस इसके विशाल स्वरूपों को देखने और समझने की जरूरत होती है। आप अपने इर्दगिर्द किसी न किसी रूप में उसे पाएंगे। जिंदगी के जीवन चक्र में वह अपने हर किरदार को बड़ी शिद्दत और श्रद्धा से निभाने की क्षमता रखती है। यहाँ दाई माँ का जिक्र करना तर्कसंगत होगा, जिसने आप को जन्म चाहे न दिया हो, पर उसकी ममता और स्नेह को किसी भी तरह से कम नहीं आंका जा सकता है। उनकी ईमानदारी, त्याग और हमारे प्रति किए उनके कर्तव्य का मूल्य बेशकीमती होता है।

ऐसे अनेक दाई मां हैं, जो अनेक रिश्तों में बंधी है। उनका स्थान हमारे जीवन में बनती रिश्तों की श्रृंखलाओं के साथ जुड़ता चला जाता है। कुछ तो परिवार में आई विपरीत परिस्थितियों में भी जुड़ जाती है। वहां इन्हें अपने ही परिवार के सदस्यों के दिल में अपनी जगह बनाने के लिए कई तरह की चुनौतियों का सामना अक्सर करना पड़ता है। चाहे फिर वह दूसरी मां हो या सासु माँ, जिन्हें इन खिताब का चोला पहनाकर उनकी पहचान को सीमा में बांध दिया जाता है। यह हम कैसे अनदेखा कर सकते हैं, क्योंकि इन्हीं रिश्तों की कड़ी में हर को दादी माँ, नानी माँ की उपाधि मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है। यह हमारी सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था है, जिसमें रिश्तों को इन नामों से परिभाषित करने का रिवाज है। माँ का रूप कोई भी हो,उसके अंतरमन व आत्मा में सिर्फ माता ही बसती है। आज भी पारिवारिक ढाँचे में हमारी सोच का नजरिया इतना उथला है कि हम किसी भी रिश्ते को समझने के मापदंडों में खुलापन लाने में कंजूसी कर जाते हैं। जरा सोचिए, फिर कैसे आप कह पायेंगे कि मेरे पास माँ है, अईं तेरे पास क्या है।

कहा जाता है कि इस दुनिया में हर व्यक्ति स्वार्थ से भरपूर है, लेकिन एक माँ ही हैं, जो सब के लिए निःस्वार्थ, बिना शिकन लाये, हर जिम्मेदारी को बखूबी निभाने का हौसला रखती है। उसको समझने के लिए हम सबको मां के लिए, जो कुछ भी कर सकें, जरूर करें, और कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दें। दुनिया में वही तो एक हैं, जो सबसे ज्यादा आपको प्यार करती है। माँ को आदर सम्मान देने का अवसर बड़े सौभाग्य से ही प्राप्त होता है। हमारी माँ हमारे जीवन की सबसे पहली अध्यापिका होती है, अच्छे संस्कार भी हमें उनसे ही मिलते हैं, गलत और सही का रास्ता दिखाने वाली माँ ही तो होती है। उसकी दुआ में ही जीवन का अर्थ लिये समस्त विश्व समाया है।

करोड़ों को अपने में समाये, आदि गुरु,
है जननी हमारी,
सभ्यता व संस्कारों में है बसी, रचयिता
है पूरे संसार की,
न बिछाओ कांटे उसकी राह में, दुआएँ
लेकर चलो उसकी,
रास्ते हो जायेंगे सरल, अर्थ तो जानो,
अमूल्य है मां ।

इसलिए तलाश के उस गीत में मशहूर गीतकार मजरूह सुल्तानपुरी ने लिखा है कि मेरी दुनिया है मां तेरे आंचल में

(वरिष्ठ लेखिका और चिंतक)